बीस कचौड़ी पूड़ी तीस

श्रीप्रसाद

चित्रः प्रोइति रॉय

इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप



बीस कचौड़ी पूड़ी तीस

Bees Kachauri Poori Tees

पहला संस्करण : 2021

पाठ : श्रीप्रसाद
चित्र : प्रोइति रॉय
सम्पादन : सुशील शुक्ल

कागज़ : 130 gsm नैचुरल शेड पेपर एवं 300 gsm मैट आर्ट कार्ड (कवर)

मूल्य : ₹140.00

ISBN 978-81-950639-9-4



प्रकाशक
जुगनू प्रकाशन
इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप
सी-404 (बेसमेंट), डिफेन्स कॉलोनी
नई दिल्ली 110024
फोन : 011-41555418/41555428

मुद्रक
इमेजिकाग्राफिक्स प्रा० लि०
ए-44, एफ.आई.ई.ई.कॉम्पलेक्स
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 2
नई दिल्ली 110020
फोन : 011-41825559

बीस कचौड़ी पूड़ी तीस

श्रीप्रसाद

चित्रः प्रोइति रॉय

जुगनू
इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप





छींक

बाबा छींके बड़ी ज़ोर से
पुलिस दौड़ती आई
आकर सब लोगों से पूछा
क्यों बन्दूक चलाई

यहाँ नहीं बन्दूक चली है
हँसकर बाबा बोले
ज़रा ज़ोर से मैंने छींका
तुम हो कितने भोले

तभी छींक आ गई उन्हें फिर
पुलिस बहुत शरमाई
हँसकर बोली, बड़ी ज़ोर से
आप छींकते भाई



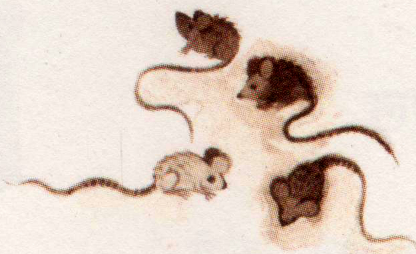
सवाल



एक बार बोले दादाजी
दो में पाँच घटाओ
और बचे जो, उतने लड्डू
मुझसे लेकर खाओ

बच्चे बोले, दादाजी मत
बुद्धू हमें बनाओ
दो में पाँच घटेगा कैसे
लड्डू हमें खिलाओ







दहीबड़ा

सारे चूहों ने मिल-जुलकर
एक बनाया दहीबड़ा
सत्तर किलो दही मँगवाया
फिर छुड़वाया दहीबड़ा

दिनभर रहा दही के अन्दर
बहुत बड़ा वह दहीबड़ा
फिर चूहों ने उसे उठाकर
दरवाज़े से किया खड़ा

रात और दिन दहीबड़ा ही
अब सब चूहे खाते हैं
मौज मनाते, गाना गाते
कहीं न घर से जाते हैं







दादी-दादा



एक हमारे दादाजी हैं
एक हमारी दादी
दोनों ही पहना करते हैं
बिलकुल भूरी खादी

दादी गाना गाया करतीं
दादाजी मुस्काते
कभी-कभी दादाजी भी हैं
कोई गाना गाते



बाबा बोले



बाबा बोले, बबलू बेटा
तुमने बरफी खाई है?
आज तुम्हारी दादी बरफी
काफी ज़्यादा लाई है

अगर नहीं खाई हो बरफी
माँगो दादी से जाकर
मैं भी दो बरफी खाऊँगा
मुझको भी देना लाकर



बड़ी बुआ

खाने को दो खीरकदम
खाने को दो मालपुआ
खाने को देना पेड़ा
माँग रही हैं बड़ी बुआ

बड़ी बुआ ने खाया सब
बड़े पलंग पर बैठीं अब
अब क्या लेंगी बड़ी बुआ
शायद माँगेंगी हलुआ

भूखा मुझे उठाया है

बीस कचौड़ी पूड़ी तीस
दहीबड़े खाए इकतीस
तीन पाव रबड़ी खाई
खीर कटोरे भर आई

लाला सब कुछ खाकर के
बोले यूँ झल्लाकर के
पापड़ नहीं खिलाया है
भूखा मुझे उठाया है





एक गिलहरी

एक गिलहरी एक पेड़ से
भागी-भागी आती है
एक गिलहरी नीचे बैठी
उसको पास बुलाती है

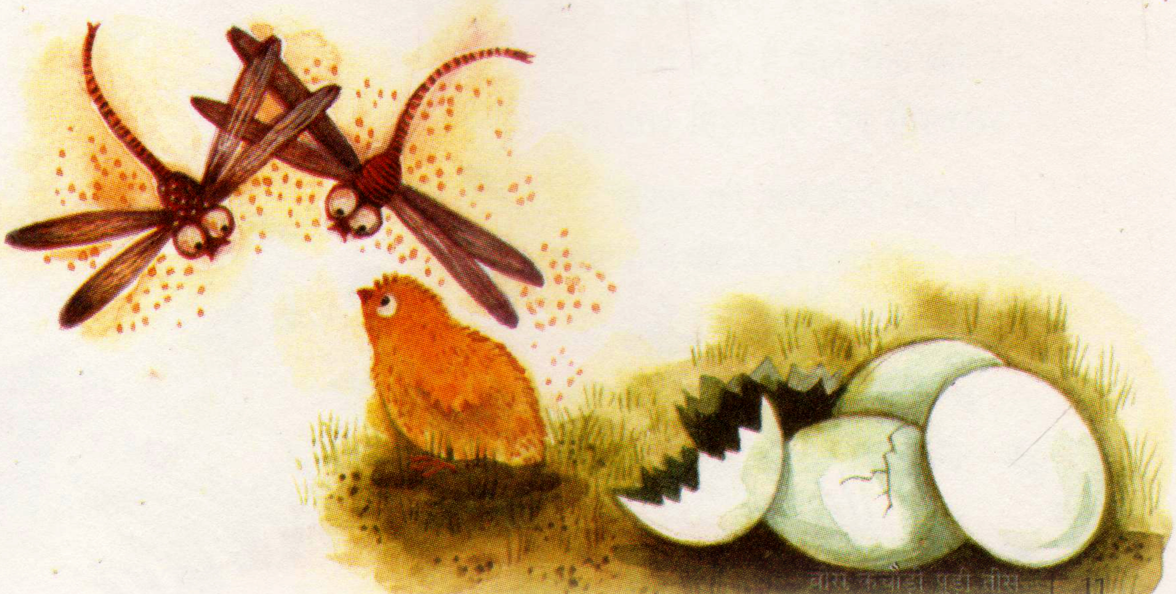
दोनों मिलकर नाच रही हैं
अपनी पूँछ उठा करके
इतना सुन्दर नाच देखती
एक मोरनी आ करके



बब्बी-डब्बी

बब्बी बोला, इस चूज़े ने
कैसे अण्डा तोड़ा
कैसे फिर यह बाहर आया
चलता थोड़ा-थोड़ा

मगर बताओ पहले बब्बी
डब्बी बोला ऐसे -
अण्डे के भीतर यह चूज़ा
आखिर पहुँचा कैसे?



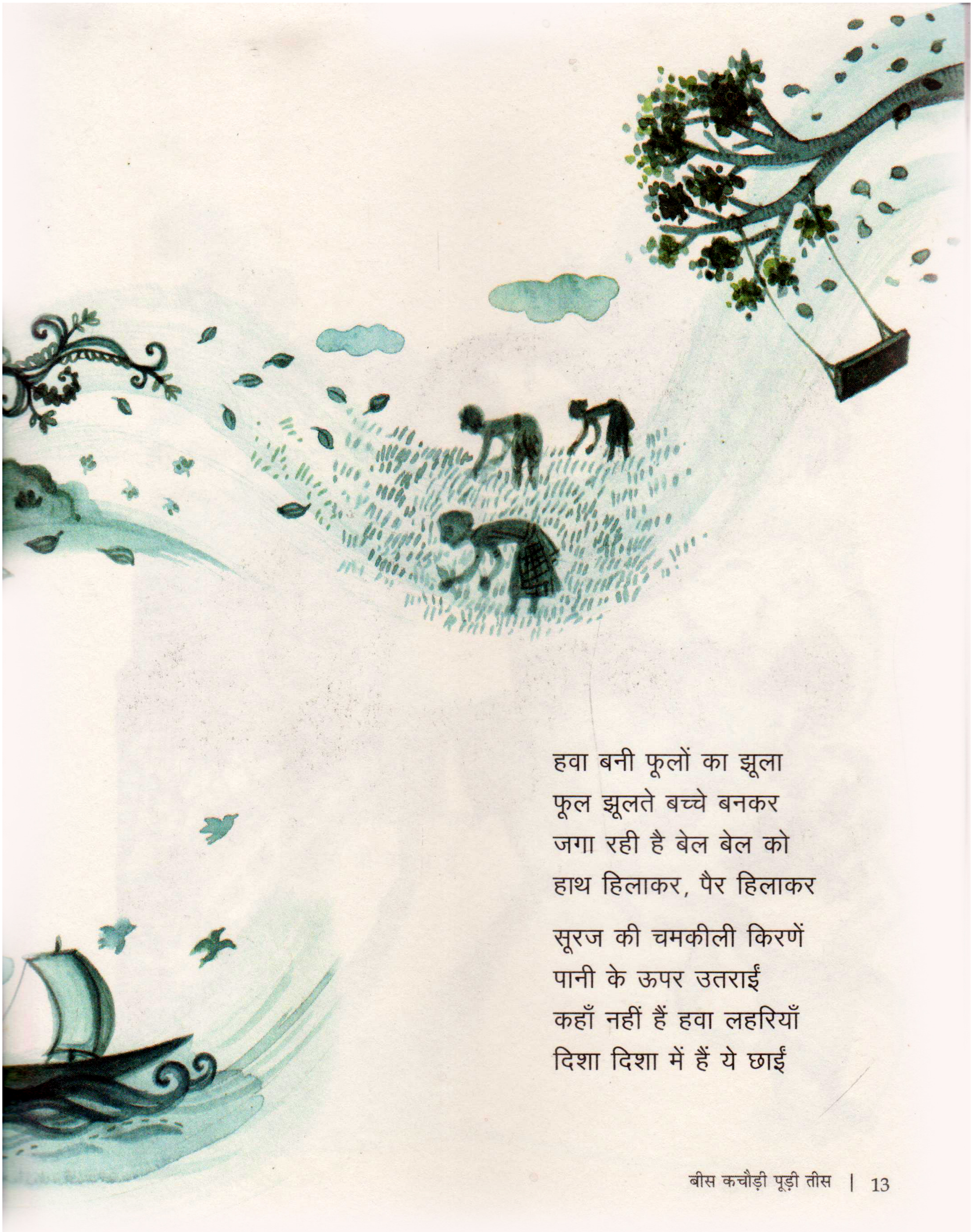


हवा नदी है

हवा बही है आँगन आँगन
हवा बही है द्वारे द्वारे
हवा नदी है, जो बगिया में
बहने को आई भिनसारे

पत्ते डूब रहे पानी में
पेड़ सभी पानी में आए
नदी हवा की सभी जगह है
इसमें सारे खेत समाए





हवा बनी फूलों का झूला
फूल झूलते बच्चे बनकर
जगा रही है बेल बेल को
हाथ हिलाकर, पैर हिलाकर

सूरज की चमकीली किरणें
पानी के ऊपर उतराईं
कहाँ नहीं हैं हवा लहरियाँ
दिशा दिशा में हैं ये छाईं



मैं जितना ऊँचा हूँ

मैं जितना ऊँचा हूँ, उतना -
ऊँचा ताड़ नहीं है
मेरे जितना बड़ा एक भी,
कहीं पहाड़ नहीं है

बादल नहीं गरज सकते हैं,
मुझ से भारी स्वर में
रेल चलेगी क्या, चलता हूँ -
मैं जितना क्षणभर में

हाथी क्या खाएगा, जितना -
मैं खाना खाता हूँ
ऊँट पिएगा पानी क्या, मैं -
जितना पी जाता हूँ





घूमा पहिया

घूमा पहिया, इक्का चलता
घूमा पहिया, कार चली
घूमा पहिया और साइकिल
टन टन टन बाज़ार चली।
घूमा पहिया, रेल चल पड़ी
और बैलगाड़ी जाती
घूमा पहिया, दूर-दूर तक
हमको मोटर पहुँचाती।
घूमा पहिया, लो जहाज़ ने
दौड़ लगाई, उड़ता अब
पहियों पर ही उतरेगा यह
ऊपर उड़कर मुड़ता अब।
घूमा पहिया, ऑटो चलता
सड़कों पर चलता रोलर
घूमा पहिया, आटा-चक्की
चलती कुक-कुक-कुक दिनभर।
घूमा पहिया, सारी दुनिया
इस पहिए पर चलती है
घर के बाहर पहिए पर ही
कितनी भीड़ निकलती है।
खेल रहे हैं हम पहिए से
पहिया भागा जाता है
पहिया ही हमको काशी से
कोलकाता पहुँचाता है।

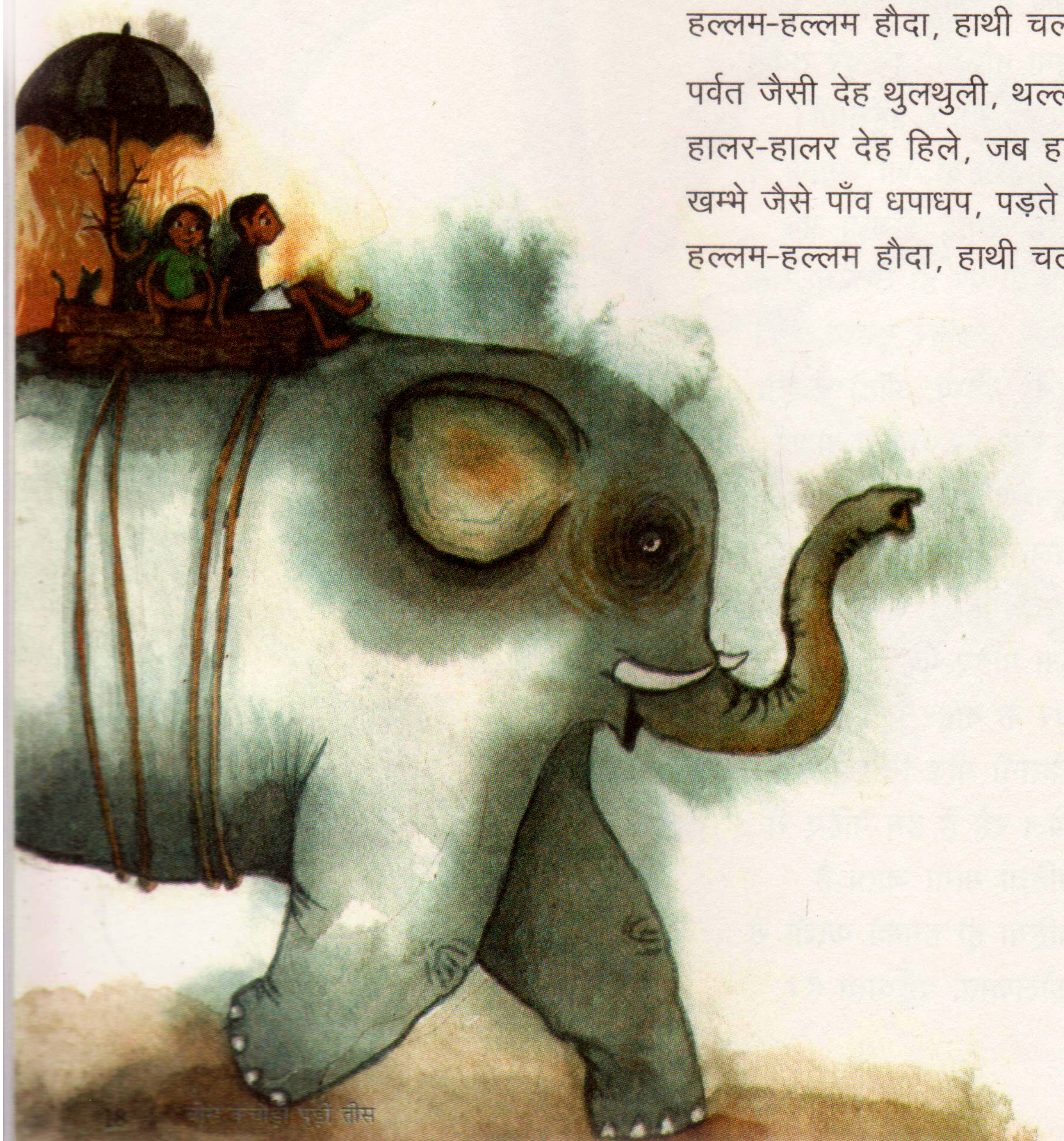


हाथी चल्लम-चल्लम

हल्लम-हल्लम हौदा, हाथी चल्लम-चल्लम
हम बैठे हाथी पर, हाथी हल्लम-हल्लम

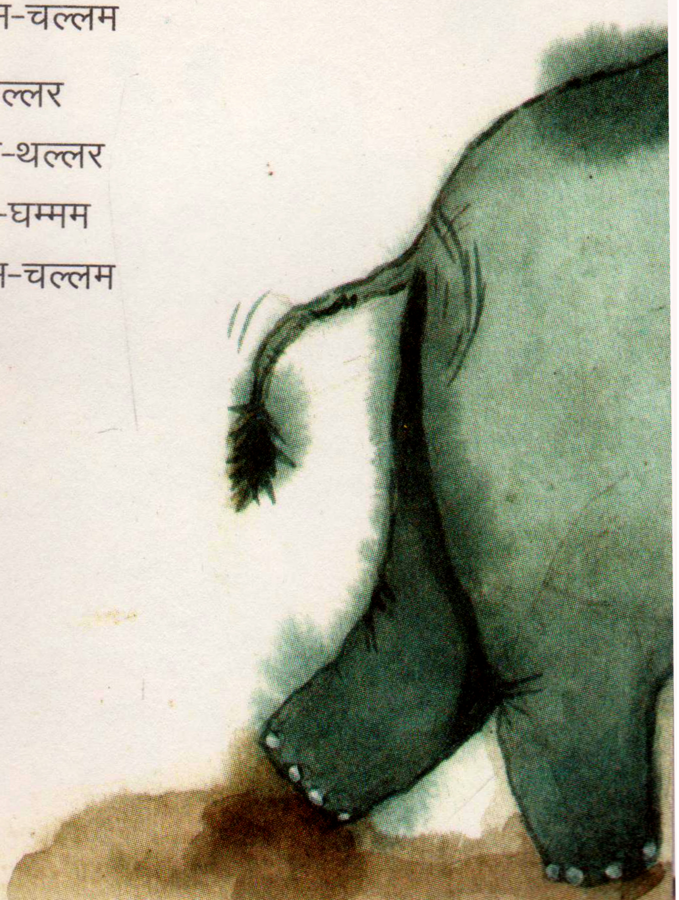
लम्बी-लम्बी सूँड फटाफट, फट्टर-फट्टर
लम्बे-लम्बे दाँत खटाखट, खट्टर-खट्टर
भारी-भारी मूँड मटकता, झम्मम-झम्मम
हल्लम-हल्लम हौदा, हाथी चल्लम-चल्लम

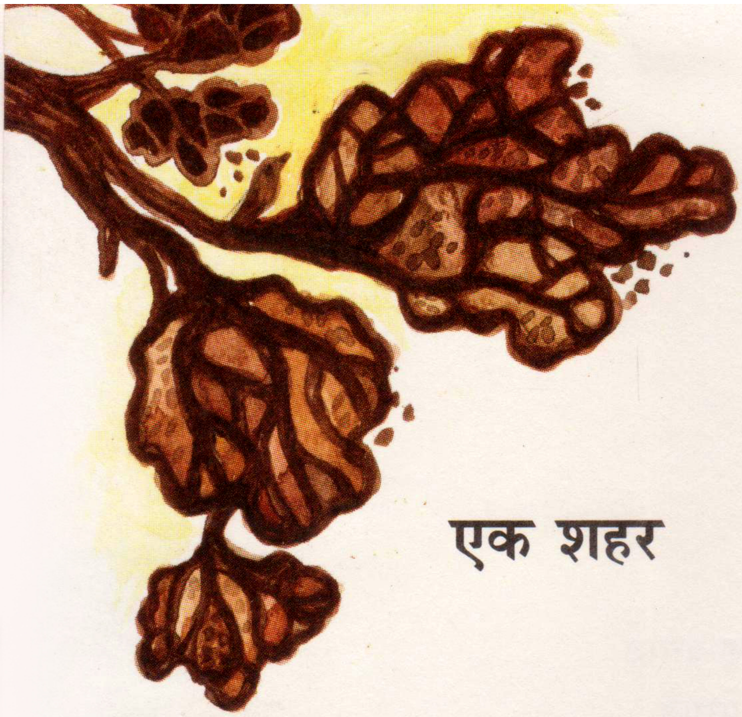
पर्वत जैसी देह थुलथुली, थल्लल थल्लल
हालर-हालर देह हिले, जब हाथी चल्लल
खम्भे जैसे पाँव धपाधप, पड़ते धम्मम
हल्लम-हल्लम हौदा, हाथी चल्लम-चल्लम



हाथी जैसी नहीं सवारी, अग्गड़-बग्गड़
पीलवान पुच्छन बैठा है, बाँधे पग्गड़
बैठे बच्चे बीस सभी हम, डग्गम-डग्गम
हल्लम-हल्लम हौदा, हाथी चल्लम-चल्लम

दिनभर घूमेंगे हाथी पर, हल्लर-हल्लर
हाथी दादा, ज़रा नाच दो, थल्लर-थल्लर
अरे नहीं, हम गिर जाएँगे, घम्मम-घम्मम
हल्लम-हल्लम हौदा, हाथी चल्लम-चल्लम





एक शहर

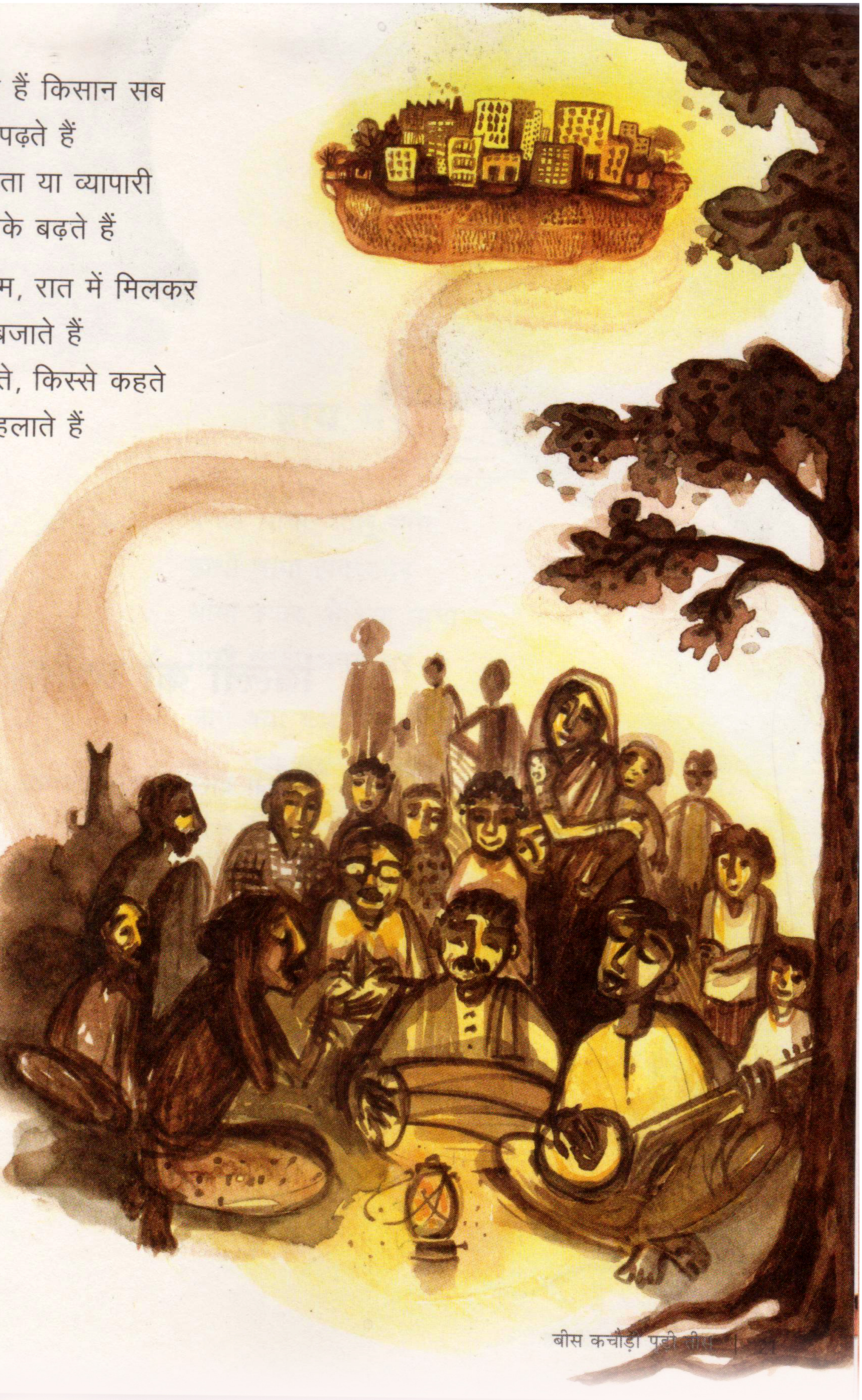
एक शहर मैंने देखा है
रहता है जो जगरमगर
कभी नहीं बिजली जाती है
ऐसा है वह बना शहर

ऐसे लोग वहाँ रहते हैं
लड़ना आता नहीं जिन्हें
लड़ना-भिड़ना ठीक नहीं है
यह सब भाता नहीं जिन्हें

पुलिस नहीं है, नहीं मुकदमे
न्यायालय का नाम नहीं
दिनभर सब मेहनत करते हैं
पलभर भी आराम नहीं

खेती करते हैं किसान सब
बच्चे सारे पढ़ते हैं
अफसर, नेता या व्यापारी
मेहनत करके बढ़ते हैं

दिन में काम, रात में मिलकर
गाते और बजाते हैं
नाटक करते, किस्से कहते
ऐसे मन बहलाते हैं





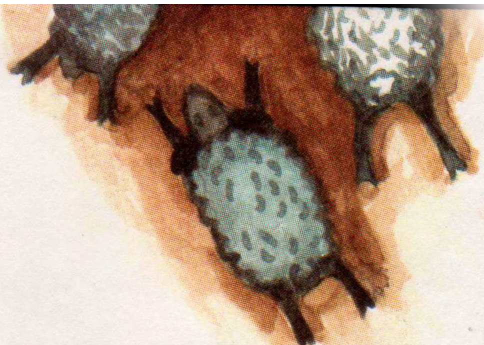
बिल्ली को जुकाम

बिल्ली बोली, बड़ी ज़ोर का
मुझको हुआ जुकाम
चूहे चाचा, चूरन दे दो
जल्दी हो आराम

चूहा बोला, बतलाता हूँ
एक दवा बेजोड़
अब आगे से चूहे खाना
बिलकुल ही दो छोड़







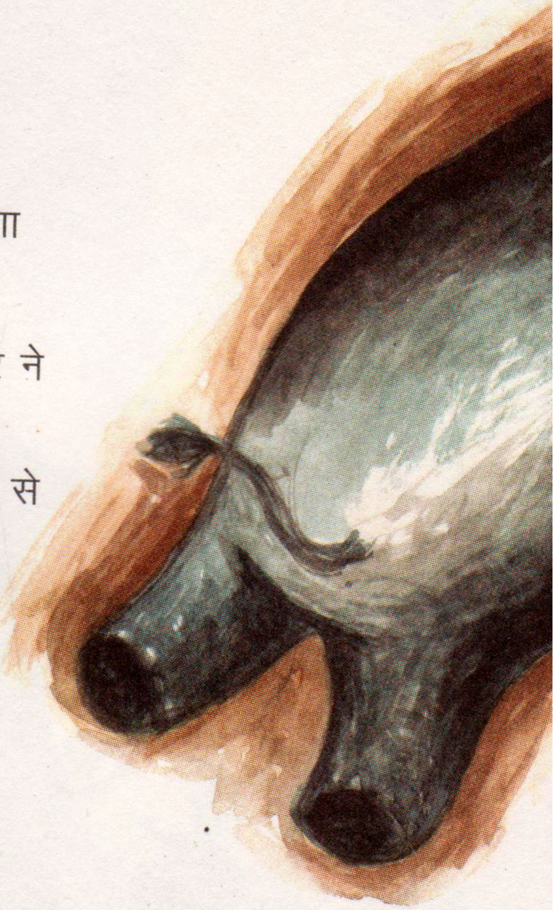


हाय मरे



बन्दर भागा, भालू भागा
हाथी भागा लदरबदर
भागा स्यार, भेड़िया भागा
भागी साही अपने घर

जाने क्या कह दिया शेर ने
भाग चले सब डरे डरे
भाग चला खरगोश ज़ोर से
कहता ऐसे - हाय मरे









तीनों हँसीं महीनों

नीना हँसी, हँसी बीना भी
लेकिन हँसी न बेला
हँसती कैसे, मिला न उसको
सेब, सन्तरा, केला

जब उसको भी मिले साथ में
खूब हँसीं फिर तीनों
और हँसीं वे नहीं एक दिन
हँसती रहीं महीनों



एक सवारी

दो पहियों की एक सवारी
चलती है सन-सनन-सनन
पैडल मारो और बजाओ
टन-टन घण्टी, टनन-टनन

जल्दी जाती, पर क्या खाती
सिर्फ हवा ही खाती है
और हवा के बल पर ही यह
बड़ी दूर तक जाती है

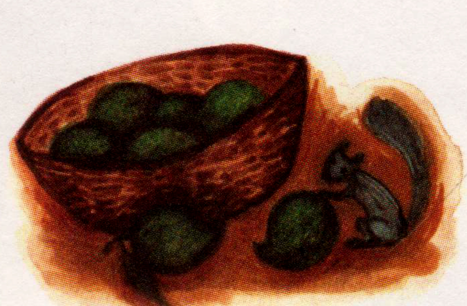




पौधा तो जामुन का ही था

पौधा तो जामुन का ही था
लेकिन आए आम
पर जब खाया, तो यह पाया
ये तो हैं बादाम

जो उनको बोया ज़मीन में
पैदा हुए अनार
पकने पर हो गए सन्तरे
मैंने खाए चार









श्रीप्रसाद

आधुनिक हिन्दी बाल साहित्य की बुनियाद रखने वालों में से एक बेहद अहम रचनाकार हैं। उन्होंने पचास से ज़्यादा साल इस इलाके में काम किया। और बच्चों के लिए पचास से ज़्यादा किताबें लिखीं। क्या कविता, क्या कहानी और क्या नाटक...उन्होंने साहित्य की हर विधा में बच्चों के लिए लिखा। 'हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम', *'पौधा तो जामुन का ही था'* जैसी दसियों कविताएँ हैं जो बच्चों और बड़ों की जुबान पर चढ़ीं।

'हल्लम हल्लम हौदा' कविता पर भी एक किताब इकतारा ने प्रकाशित की है। उनके इतने बड़े रचना संसार में इस संग्रह की कविताएँ एक छोटा-सा द्वीप है। यहाँ कुछ समय रहना। तुम महसूस करोगे कि श्रीप्रसादजी की कविताओं की बुनाई कितनी महीन है। जैसे उनके मन में भाषा का एक छोटा-सा कारखाना रहता हो। हिलते-डुलते हाथी के साथ कैसे एक पूरी हिलती-डुलती बच्चों की टोली चलती है और वहाँ बैठकर कैसे पेड़, धरती, मैदान सब हिलते-डुलते लगते हैं - हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम...हिलना शब्द का अर्थ उसके बोलने में आ गया है। अर्थ तक जाने की जैसे ज़रूरत खत्म हो गई है। ऐसे कवि के प्रेम में तुम भी पड़ो और देखो, दुनिया कितनी खूबसूरत है!

प्रोइति रॉय

प्रोइति रॉय चित्रकार तथा डिज़ाइनर हैं। कला की पढ़ाई उन्होंने विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतन से की है। कुछ साल एडवरटाइज़िंग में लगाने के बाद एक लम्बा अरसा उन्होंने बच्चों को कला और क्राफ्ट सिखाने में बिताया। बच्चों की किताबों और चित्रों के लिए उनका प्रेम उन्हें बच्चों के लिए चित्र बनाने की तरफ खींच लाया।

फिलहाल शान्तिनिकेतन में रहते हुए वे अपने दो सबसे मनपसन्द काम कर रही हैं - बच्चों की किताबें चित्रित करना और मुश्किल में पड़े जानवरों को बचाना।

proitiroy@gmail.com



इकतारा से प्रकाशित अन्य कविता संग्रह

- किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए हैं
- तुम भी आना
- ईलम डील
- केरल के केले
- नींद किस चिड़िया का नाम है
- टाउल टापुल
- पानी उतरा टीन पर
- चार चटोरे
- जंगल के बीच ट्रेन खड़ी थी
- चाँद की रोटी
- चींटी चढ़ी पहाड़
- भाई तू ऐसी कविता क्यों करता है
- खाई दाल - पीठ पर बस्ता
- बकरी के साथ
- हाथी चल्लम चल्लम

इकतारा

इकतारा तक्षशिला का बालसाहित्य एवं कला केन्द्र है। यह केन्द्र भोपाल में स्थित है। इकतारा बच्चों की दुनिया में साहित्य तथा कला के रंग और अनुभव जुटाने में लगा है। बच्चों को अपने मन की किताबें, पत्रिकाएँ पढ़ने को मिलें। उन्हें कहानियाँ सुनने को मिलें। कविताएँ गुनगुनाने को मिलें। चित्र आदि तमाम कलाओं का सुख उन्हें सम्भव हो। एक ऐसे भरे-पूरे बचपन का स्वप्न इकतारा दुनिया भर के बच्चों के लिए और अपने लिए देखता है।

जुगनू प्रकाशन इकतारा द्वारा विकसित किताबें प्रकाशित करता है।

ई-1/212, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462016

फोन : 0755-4939472, 9109915118, 9630097118

info@ektaraindia.in | www.ektaraindia.in

घूमा पहिया, सारी दुनिया
इस पहिए पर चलती है
घर के बाहर पहिए पर ही
कितनी भीड़ निकलती है।



Big Little Book Award
Winning Illustrator

इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप

ISBN 978-81-950639-9-4
9 788195 063994

मूल्यः ₹ 140.00